कहानी

एकता में है बल

गांव आनंदपुर अपनी हरियाली और खुशहाली के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध था. गांव के बीचों-बीच एक बड़ा तालाब था, जिससे खेतों की सिंचाई होती थी और लोगों की रोजमर्रा की जरूरतें भी पूरी होती थीं। कई वर्षों तक सब कुछ ठीक चलता रहा, लेकिन एक वर्ष भीषण गर्मी और कम बारिश के कारण तालाब लगभग सूख गया. पानी की कमी बढ़ते ही गांव के लोगों में झगड़े शुरू हो गए.

कोई अपने खेत के लिए ज्यादा पानी चाहता था तो कोई अपने पशुओं के लिए. धीरे-धीरे लोग एक-दूसरे से नाराज रहने लगे. पंचायत की बैठकों में भी केवल आरोप-प्रत्यारोप होते, लेकिन समाधान किसी के पास नहीं था.

गांव के सबसे बुजुर्ग और सम्मानित व्यक्ति रामदास बाबा यह सब चुपचाप देख रहे थे. एक दिन उन्होंने पूरे गांव की सभा बुलाई. सभा में उन्होंने एक लकड़ी उठाई और उसे आसानी से तोड़ दिया. फिर उन्होंने दस लकड़ियों का एक मजबूत गट्ठर बनाया और उसे तोड़ने की कोशिश की. काफी प्रयास करने के बाद भी वह गट्ठर नहीं टूटा. रामदास बाबा मुस्कुराए और बोले, 'जिस तरह एक अकेली लकड़ी आसानी से टूट जाती है, लेकिन कई लकड़ियां मिलकर मजबूत बन जाती हैं, उसी तरह यदि हम सब अलग-अलग लड़ेंगे तो हार जाएंगे. लेकिन अगर साथ खड़े होंगे तो हर मुश्किल को हरा देंगे. बाबा की बात सभी के दिल को छू गई. अगले ही दिन गांव के युवाओं, किसानों, महिलाओं और बुजुर्गों ने मिलकर तालाब की सफाई शुरू कर दी. किसी ने मिट्टी हटाई, किसी ने टूटे हुए किनारों की मरम्मत की, तो किसी ने पास की छोटी नहर को तालाब से जोड़ने का काम किया.

गांव की महिलाओं ने काम करने वालों के लिए भोजन और पानी की व्यवस्था संभाली. बच्चे भी छोटे-छोटे कामों में मदद करने लगे. कई दिनों की मेहनत के बाद तालाब पहले से कहीं अधिक गहरा और मजबूत बन गया. कुछ ही दिनों बाद अच्छी बारिश हुई. इस बार तालाब पूरी तरह भर गया. खेतों तक पानी पहुंचा, फसलें लहलहाने लगीं और गांव में फिर से खुशहाली लौट आई. लोगों को समझ आ गया कि यदि वे पहले की तरह आपस में लड़ते रहते, तो शायद पूरा गांव पानी की कमी से जूझता रहता.

उस दिन के बाद आनंदपुर में एक नया नियम बनाया गया कि गांव की किसी भी समस्या का समाधान मिलकर किया जाएगा. हर महीने ग्रामसभा आयोजित होने लगी, जिसमें सभी लोग अपनी राय रखते और सामूहिक निर्णय लेते. धीरे-धीरे गांव शिक्षा, खेती और स्वच्छता के क्षेत्र में भी आसपास के गांवों के लिए उदाहरण बन गया. एक दिन जिला अधिकारी गांव के दौरे पर आए. उन्होंने गांव की व्यवस्था देखकर कहा, आनंदपुर की सबसे बड़ी ताकत इसकी जमीन नहीं, बल्कि यहां के लोगों की एकता है.

रामदास बाबा मुस्कुराए और बोले, जहां दिल जुड़ते हैं, वहां मुश्किलें अपने आप बिखर जाती हैं. उस दिन गांव के बच्चों ने भी यह संकल्प लिया कि वे हमेशा मिल-जुलकर रहेंगे और कभी भी आपसी मतभेद को अपने रिश्तों से बड़ा नहीं बनने देंगे. पूरे गांव ने महसूस किया कि सच्ची समृद्धि केवल संसाधनों से नहीं, बल्कि एक-दूसरे का साथ देने से आती है. यही एकता उन्हें हर संकट से बाहर निकालने की सबसे बड़ी शक्ति बनी.

सीख

एकता में अपार शक्ति होती है. जब लोग आपसी प्रेम, विश्वास और सहयोग के साथ मिलकर काम करते हैं, तो बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान भी संभव हो जाता है. एकजुट समाज ही मजबूत, समृद्ध और सफल समाज बनता है.

बिंदु मिलाओ

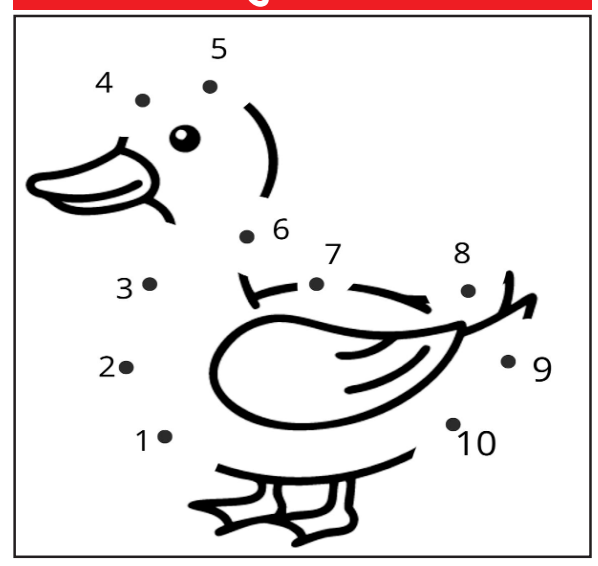

रंग भरो

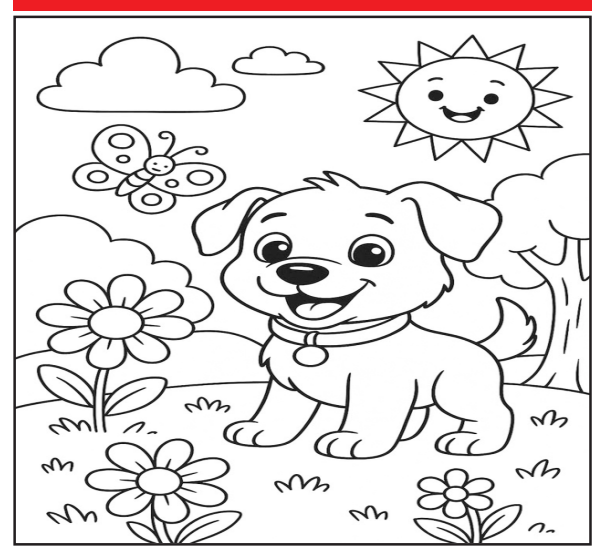

प्रेरक प्रसंग

ईमानदारी की मिसाल बने लाल बहादुर शास्त्री

जीवन में सफलता पाने के लिए केवल धन या बड़े साधनों की नहीं, बल्कि सच्चाई, मेहनत और मजबूत इरादों की जरूरत होती है. भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का जीवन इसी बात का सबसे बड़ा उदाहरण है. वे साधारण परिवार में जन्मे, बचपन में अनेक कठिनाइयों का सामना किया, लेकिन कभी भी ईमानदारी और मेहनत का रास्ता नहीं छोड़ा.

शास्त्री जी का जीवन बच्चों के लिए प्रेरणा का खजाना है. उन्होंने सादगी को अपनी पहचान बनाया और हमेशा देश तथा समाज की भलाई को सबसे ऊपर रखा. उनके विचार, व्यवहार और निर्णय आज भी लोगों को सही राह पर चलने की प्रेरणा देते हैं. उनका प्रसिद्ध नारा 'जय जवान, जय किसान' आज भी पूरे देश में गर्व के साथ बोला जाता है. यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि देश के सैनिकों और किसानों के प्रति सम्मान का संदेश है.

आइए जानते हैं लाल बहादुर शास्त्री के जीवन की एक ऐसी प्रेरक कहानी, जो हमें ईमानदारी, जिम्मेदारी और देशप्रेम का महत्व सिखाती है. लाल बहादुर शास्त्री का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में हुआ था. जब वे बहुत छोटे थे, तभी उनके पिता का निधन हो गया. परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, लेकिन उनकी माँ ने कठिन परिस्थितियों में भी बच्चों को अच्छे संस्कार दिए. बचपन में शास्त्री जी स्कूल जाने के लिए कई किलोमीटर पैदल चलते थे. कई बार उन्हें नदी पार करनी पड़ती थी. कहा जाता है कि जब नाव का किराया देने के लिए पैसे नहीं होते थे, तब वे अपने कपड़े सिर पर रखकर तैरते हुए नदी पार कर लेते थे.

इस घटना से उनकी मेहनत, साहस और शिक्षा के प्रति समर्पण का पता चलता है. बड़े होने पर वे स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुए और देश की आजादी के लिए जेल भी गए. आजादी के बाद उन्होंने विभिन्न जिम्मेदारियाँ निभाईं और अपनी ईमानदारी से लोगों का विश्वास जीता. उनकी सादगी का एक प्रसिद्ध उदाहरण यह है कि वे सरकारी संसाधनों का निजी काम के लिए उपयोग नहीं करते थे. यदि कभी निजी कार्य के लिए सरकारी फोन का उपयोग हो जाता, तो उसका भुगतान अपनी जेब से करते थे. यह घटना हमें सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा और जिम्मेदारी का महत्व सिखाती है. साल 1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान उन्होंने पूरे देश का हौसला बढ़ाया.

कछुआ : सबसे लम्बा आयु वाला जीव

क्या आपने कभी सोचा है कि धरती पर ऐसा कौन-सा जीव है जो कई इंसानों की पूरी जिंदगी से भी अधिक समय तक जीवित रह सकता है. इस सवाल का जवाब है कछुआ. अपनी धीमी चाल और मजबूत कवच के लिए प्रसिद्ध कछुआ दुनिया के सबसे लंबे समय तक जीवित रहने वाले जीवों में गिना जाता है. यही कारण है कि कई संस्कृतियों में इसे धैर्य, शांति और लंबी आयु का प्रतीक माना जाता है.

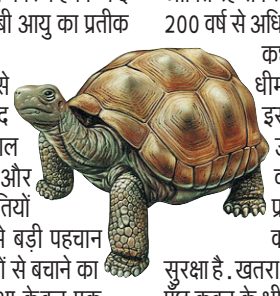

कछुए पृथ्वी पर करोड़ों वर्षों से मौजूद हैं और समय के साथ उन्होंने खुद को बदलते वातावरण के अनुसार ढाल लिया है. समुद्र, नदियों, तालाबों और जमीन—हर जगह अलग-अलग प्रजातियों के कछुए पाए जाते हैं. इनकी सबसे बड़ी पहचान इनका कठोर कवच है, जो इन्हें दुश्मनों से बचाने का काम करता है. बच्चों के लिए कछुआ केवल एक रोचक जीव नहीं, बल्कि प्रकृति का एक जीवित अजूबा भी है. इसकी लंबी उम्र, शांत स्वभाव और अनोखी जीवनशैली वैज्ञानिकों को भी आकर्षित करती है. आइए जानते हैं कछुए की उम्र और उससे जुड़े कुछ ऐसे रोचक तथ्य, जिन्हें जानकर आप भी हैरान रह जाएंगे. कछुआ सरीसृप वर्ग का जीव है और दुनिया भर में इसकी 350 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं. सभी कछुओं की उम्र एक जैसी नहीं होती. छोटी प्रजातियाँ सामान्यतः 20 से 50 वर्ष तक जीवित रहती हैं, जबकि बड़े स्थलीय कछुए अक्सर 100 से 150 वर्ष या उससे भी अधिक समय तक जीवित रह सकते हैं. कुछ दुर्लभ कछुओं की आयु 180 से 200 वर्ष से अधिक भी दर्ज की गई है.

कछुए की लंबी उम्र का एक कारण उसकी धीमी चयापचय प्रक्रिया मानी जाती है. इसका शरीर बहुत धीरे-धीरे ऊर्जा का उपयोग करता है, जिससे कोशिकाओं पर कम दबाव पड़ता है और उम्र बढ़ने की प्रक्रिया अपेक्षाकृत धीमी हो जाती है.

कछुए का मजबूत कवच उसकी सबसे बड़ी सुरक्षा है. खतरा महसूस होने पर वह अपना सिर, पैर और पूँछ कवच के भीतर छिपा लेता है. यही प्राकृतिक सुरक्षा उसे लंबे समय तक जीवित रहने में मदद करती है. कछुए भोजन में घास, पत्तियाँ, फल, फूल और कुछ प्रजातियाँ छोटे जलीय जीव भी खाती हैं. संतुलित भोजन और शांत जीवनशैली भी इनके लंबे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है.

भूल भुलैया

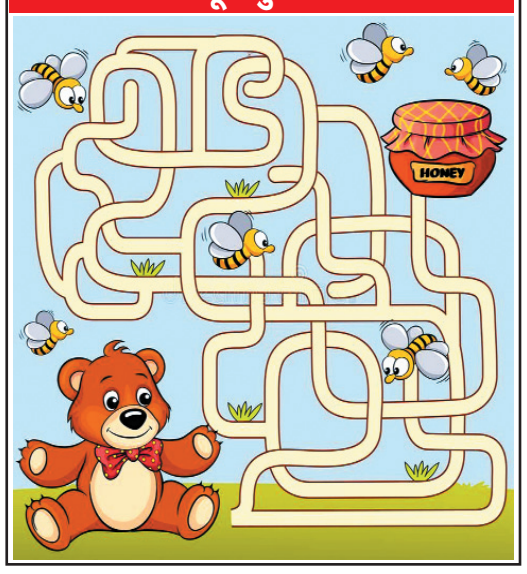

जानकारी

जिराफ : धरती का सबसे ऊँचा प्राणी

क्या आपने कभी ऐसा जानवर देखा है जिसकी गर्दन इतनी लंबी हो कि वह पेड़ों की सबसे ऊँची शाखाओं तक आसानी से पहुँच जाए? अगर नहीं, तो आइए मिलते हैं जिराफ़ से. जिराफ़ दुनिया का सबसे ऊँचा जीवित स्थलीय जानवर है. इसकी लंबी गर्दन, लंबे पैर और शरीर पर बने सुंदर भूरे धब्बे इसे बाकी सभी जानवरों से अलग पहचान देते हैं.

जिराफ़ मुख्य रूप से अफ्रीका के घास के मैदानों और खुले जंगलों में पाया जाता है. इसकी लंबी गर्दन का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह ऊँचे पेड़ों की पत्तियाँ आसानी से खा सकता है, जहाँ दूसरे जानवर नहीं पहुँच पाते. जिराफ़ देखने में शांत और सरल लगता है, लेकिन जरूरत पड़ने पर यह तेज़ दौड़ भी सकता है. बच्चों के लिए जिराफ़ केवल एक दिलचस्प जानवर ही नहीं, बल्कि प्रकृति का एक अनोखा चमत्कार भी है. इसके शरीर की बनावट, खाने का तरीका, सोने की आदत और दौड़ने की गति हर किसी को हैरान कर देती है. आइए जानते हैं जिराफ़ से जुड़ी कुछ ऐसी मजेदार और ज्ञानवर्धक बातें, जिन्हें पढ़कर आपकी जानकारी भी बढ़ेगी और मज़ा भी आएगा. जिराफ़ का वैज्ञानिक नाम जिराफ़ा कैमलोपार्डालिस है. एक वयस्क नर जिराफ़ की ऊँचाई लगभग 5.5 से 6 मीटर तक हो सकती है, यानी यह एक दो मंजिला मकान जितना ऊँचा होता है. इसका वजन 800 से 1,200 किलोग्राम तक हो सकता है. जिराफ़ की गर्दन बहुत लंबी होती है, लेकिन इसमें भी इंसानों की तरह केवल सात गर्दन की हड्डियाँ होती हैं.

फर्क सिर्फ इतना है कि इसकी हर हड्डी बहुत लंबी होती है. जिराफ़ की जीभ भी बेहद खास होती है. इसकी जीभ लगभग 45 से 50 सेंटीमीटर लंबी होती है.

कविता

प्यारी माँ

प्यारी माँ सबसे न्यारी,
लगती मुझको जग से प्यारी
मीठी बातें, प्यारी हँसी,
हर पल देती नई खुशी

गोद में लेकर प्यार जताती,
अच्छी-अच्छी बातें सिखाती
माँ का साया सबसे खास,
उससे है जीवन में विश्वास

ईश्वर से बस यही दुआ,
खुश रहे मेरी प्यारी माँ
हर दिन उनका मान करूँ,
जीवन भर सम्मान करूँ

बूझो तो जानें

- ऐसी कौन-सी चीज़ है,
  जिसके पास दाँत बहुत,
  पर कभी खाना नहीं खाती?
  उत्तर - कंघी
- एक पैर पर खड़ा रहता,
  सबको छाया देता जाता,
  धूप-बारिश में साथ निभाता,
  बताओ वह क्या कहलाता?
  उत्तर - छाता
- न हाथ हैं, न पैर हैं,
  फिर भी चलता जाता हूँ,
  समय बताकर हर पल सबको
  काम पर लगवाता हूँ.
  उत्तर - घड़ी
- काला मेरा रंग है भाई,
  उजियारा मैं फैलाऊँ,
  जलते ही मैं छोटा होता,
  फिर भी सबको राह दिखाऊँ.
  उत्तर - मोमबत्ती

हंसी-ठिठोली

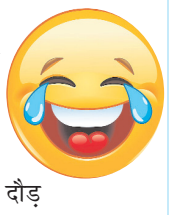

- टीचर - स्टूडेंट
  टीचर: बताओ, सबसे तेज़ क्या दौड़ता है?
  छात्र: छुट्टी की घंटी, सर!
  टीचर: कैसे?
  छात्र: बजते ही पूरा स्कूल दौड़ पड़ता है.
- टीचर: अगर तुम्हारे पास 10 चॉकलेट हैं और मैं 4 ले लूँ तो क्या बचेगा?
  छात्र: सर, झगड़ा.
- मम्मी: इतनी देर से मोबाइल क्यों चला रहे हो?
  बेटा: मम्मी, पढ़ाई कर रहा हूँ.
  मम्मी: मोबाइल में?
  बेटा: जी, 'ऑनलाइन मेहनत'.
- टीचर: बताओ, मेहनत का फल क्या होता है?
  छात्र: सर, रिज़ल्ट आने तक इंतज़ार!
- टीचर: बताओ, ऐसी कौन-सी चीज़ है जो बढ़ती ही जाती है?
  छात्र: सर, होमवर्क.

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

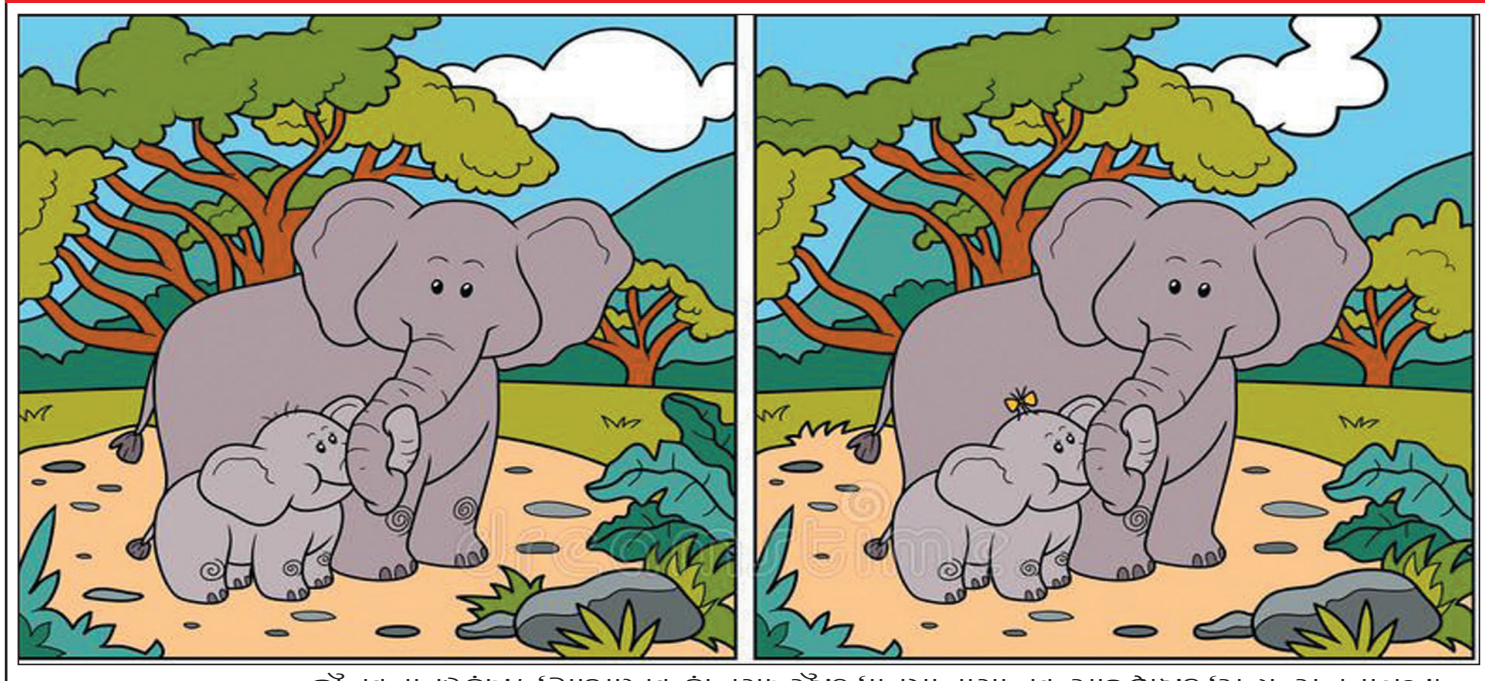

उत्तर- 1.हाथी के सिर पर पीला फूल गायब, 2.ऊपर दाईं ओर बादल का आकार दोनों चित्रों में अलग है, 3. बड़े हाथी की पूँछ, 4. जमीन पर पत्थर, 5.दाईं ओर की नीली पत्तियाँ, 6.दूर वाले पेड़ की शाखाएँ, 7.बड़े हाथी की पूँछ